R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३०	लोंद ज्येष्ठ सं० २०३६ वि० जून, १९८०	संख्या ६

चेतावनी

चेला नहीं एक मिला कोई, जो मिला वही गुरु ज्ञानी मिला ।
जोगी न मिला जंगम न मिला, तपसी न मिला नहीं ध्यानी मिला ॥१॥

गुरु कपटी चेला पाखण्डी, कोई नियमी धर्मी त्रिदंडी ।
विश्वास के रूप में बनखण्डी, अभिमानी मानी गुमानी मिला ॥

सिख साखा बहु किया करता है क्यों मोह माया में मरता है ।
दुख भार शीश पर धरता है, अमृत तज तुझको पानी मिला ॥

ले चेत चेत चेत का बेरा है, तू चेत ले अभी सवेरा है ।
आगे फिर घोर अँधेरा है, नहीं चेता तो लाज लजानी मिला ॥

सतगुरु ने तेरी भलाई की, पद कमल की शरण दया से दी ।
गुन राधास्वामी के गाओ, तब कहूँगा ठौर ठिकानी मिला ॥

—०—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

॥ मनुष्य बनो ॥

शिव संहिता

कैलाश पति अपनी अर्धाङ्गिनी उमा के साथ कैलाश में बैठे हुए थे, कुछ ऋषि उनके दर्शनार्थ वहाँ आये, नमस्कार करके उनके गले की माला को देखा, उसमें १०८ दाने खोपड़ियों के पड़े हुए थे। शिव भगवान से प्रश्न किया कि 'यह जो आपने अपने गले में जयमाल डाल रक्खी है इसमें १०८ दाने क्यों हैं ? अधिक क्यों नहीं और कम क्यों नहीं ? यदि कष्ट न हो तो कृपया इसका रहस्य हमें समझा दीजिये।'

शिवजी हँसे, कहने लगे 'मेरे शरीर में द्वादश चक्र, द्वादश लिंग और द्वादश अर्घ हैं और फिर इनमें नौ २ प्रकार के तत्व भरे हुए हैं। यह मेरी शक्तियाँ कहलाती हैं। बारह को ९ से गुणा किया, गुणनफल १०८ हुआ, इन शक्तियों में अदल बदल होती रहती है और यह श्री का रूप होती हैं, जिसे संसार अहो भाग्य बड़प्पन और व्यौहार कुशलता का चिन्ह मानते हैं क्योंकि यह क्षण २ बदलती रहती हैं, एक रस कभी नहीं रहतीं, इसी कारण मैंने इनकी खोपड़ियों के दानों की माला बना रक्खी है और यह मेरे गले की शोभा वढाने वाली समझी जाती हैं।'

ऋषि प्रसन्न हुए और पूछने लगे 'भगवन यह नौ तत्व क्या हैं ?'

शिवजी बोले 'साधारण बोल चाल में तुमको उत्तर दूं या असाधारण में ?'

ऋषि बोले 'महाराज ऐसी बाणी में कहिये जो सरलता से समझ में आ जाय, हम आपके साथ तर्क वितर्क करने नहीं आये, केवल शंका समाधान के निमित सेवा में उपस्थित हुए हैं ?'

शिवजी हँसे बोले 'प्रकृति में नौ तत्व हैं (१) सत (२) सत्ता (३) सूर्य (४) चन्द्रमा (५) मंगल (६) बुद्ध (७) बृहस्पति (८) शुक्र और (९) शनि।

यह एक दूसरे से मिल जुल कर, बदल २ कर तरह २ के रंग रूप गढ़ २ कर, अपनी लीला करते रहते हैं। सत असली चीज है। वह असली तत्व है

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

कोई उसे आत्मा कहता है, कोई ब्रह्म कहता है, और कोई कुछ का कुछ कहता है, शब्दों में अटकने की आवश्यकता नहीं है, तत्व की ओर दृष्टि रहे। इस सत से जो धार निकलती है उसका नाम सत्ता है, वह छाया मात्र है, सत्त की छाया है, यह धार गोल चक्रों के आकार रूप में चक्र खाते हुए आठ प्रकार की सूरतें बनाती हैं। आधार तो जो कुछ है वह ही है, इसमें अदल बदल नहीं होती, उस आधार से जो धार फूटती है, उसमें आवागवन की शक्ति है और वह आठ प्रकार के रूपों में प्रकट होती रहती है। सत से सत्ता प्रकट हुई, इस सत्ता ने सत के आधार से एक विशेष प्रकार की शक्ति प्राप्त की, उससे जो पहली रचना हुई उसका नाम सूर्य है, यह सूर्य प्राण का भंडार है, प्राण रचना में प्रथम तत्व।

जहां असल है वहाँ नकल का रहना भी जरूरी है, प्रकृति में असल और नकल प्रकाश और छाया अंग संग रहते हैं, इस प्रकाश की छाया का नाम चन्द्रमा है, फिर अपनी बारी पर चन्द्रमा ने सूर्य से मिलकर दूसरी अवस्था थी उसका नाम मंगल हुआ, इस मंगल में स्थूलपना चन्द्रमा का है और प्राण या आत्मा सूर्य की है। जहाँ पुरुष और प्रकृति मिलते हैं, उसी को मंगल बोलते हैं और वहाँ से धार नीचे की ओर चलती है, क्योंकि संस्कृत में 'मघ' कहते है 'चलने' को अब इस मंगल ने चन्द्रमा से मिलकर जो तत्व उत्पन्न किया उसका नाम है 'बुद्ध' या बुद्धि। प्रकृति में यह चौथा तत्व कहलाता है, जहां सूर्य और छाया अथवा प्राण और रई मिले, बुद्धि उत्पन्न हो जाती है, स्त्री और पुरुष के रज वीरज की मानो चन्द्रमा और सूर्य के प्रकाश और छाया से उपेक्षता है। बालक जब गर्भ में आता है उसी घड़ी पहला तत्व 'बुद्धि' का उसके अन्दर पैदा है, फिर और काम काज होने लगता है, इसके पश्चात जव यह बुद्धि मंगल के साथ मिली, इस मिलौनी से जो धार प्रकट हुई उसका नाम बृहस्पति है। यह और कुछ नहीं है 'जिह्वा' है। बुद्धि सदैव जिह्वा से प्रकट होती है बुद्धि आधार होती है और जिह्वा उसकी धार, अब यह जिह्वा बुद्धि से मिली तो उस मिलौनी की अवस्था का नाम 'शुक्र' है शुक्र कहते हैं 'वीरज' को, शुक्र या बीरज का तत्व जिह्वा के उपरान्त पैदा

होता है संस्कृत में बृहस्पति दो शब्दों से बना है 'ब्रहद' कहते हैं बड़ाई को 'पति कहते हैं स्वामी को, बड़ाई के मालिक का नाम बृहस्पति या जिभ्या है, इसी से शक्ति का विकास होता है, इसी से मनुष्य के गुप्त और प्रकट विचारों अथवा अनुभवों का ज्ञान होता है, जब शुक्र पैदा होकर इस वाणी के साथ सम्मिलित होता है तब उससे 'शनि या 'शनैश्चर' का तत्व पैदा होता है, क्षोभ यह क्रिया शक्ति है, जब तक शुक्र न हो तब तक क्षोभ या क्रिया शक्ति में बल आना महा कठिन है, चलना फिरना काम करना यह सब उसके अन्तर्गत हैं, शुक्र संस्कृति में वीरज को कहते हैं, यह इस शरीर का राजा है, जो प्राणी इस बीरज या शुक्र को व्यर्थ नहीं खोता उसका नाम वीर, बलवान तेजस्वी तेजमय तेजवान है जो इस वीरज की फिजूल खर्ची करता है, वह कंगाल होता है और उसका नाम निर्बल, बलहीन, तेजहीन और निःतेज है।

ऋषि इस उत्तर को सुनकर प्रसन्न हुए और शिव और पारवती को नमस्कार करके अपने २ स्थान को चले गये।

—०—

धन्यवाद

श्री जगन्नाथ खुराना, अलवर (राज०) ने मनुष्य बनो की सहायतार्थ १०) का अनुदान भेजा है। मालिक उनकी दीर्घायु करे। एवं उन्नति का मार्ग प्रदर्शित करें व उनकी इसी प्रकार की प्रबृति बनाये रखे।

श्री जुगल किशोर जी सर्राफ, भीलवाड़ा (राज०) ने अपनी सुपुत्री ज्योति सर्राफ की शादी पर 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ ५१) रु० भेजें हैं। मालिक से कामना है कि वर-वधू को दीर्घायु करे एवं सदा प्रसन्न रखे।

श्रीमती राम कवर बाई भीलवाड़ा (राज०) ने 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ ११) रु० भेजा है मालिक से कामना है कि उन्हें सदा प्रसन्न रखे एवं दीर्घायु करे।

—०—

प्रवचन

हुजूर परम दयाल परम सन्त पं० फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर दि० ६-६-७६

जिनको चाह राम की साधू, राम उन्हें मिल जाते हैं।
रामदास के राम पास है, और नहीं कोई पाते हैं॥
वाद विवाद में राम नहीं है. राम न पूछा पेरवी में।
रामदास ने राम को पाया, सहज ही देखा देखी में॥
राम नहीं तीरथ में रहते, राम बरत के साथ नहीं।
रामदास के साथ राम है, औरों के वह हाथ नहीं॥
बुन्द में सिन्धु सिन्धु में बूँदें, बुन्द सिन्धु दोउ एक हुए।
बुन्द सिन्ध का झगड़ा मन में, उनके लिये अनेक हुए॥
राधास्वामी सतगुरु आये, भेद दिया पूरा पूरा।
जो कोई भेद भाव को मेटे, सतगुरु का सेवक पूरा॥

मैं सात वर्ष की आयु से राम को मिलने निकला था। मेरी किसमत या मालिक की मौज मुझे दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझको यह सन्त मत दिया। और अभ्यास दिया। मैंने यह शब्द सुना। मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूँ। फकीर चन्द ! क्या तुझे राम मिल गया ? सन्त कह देते हैं। दास को राम मिल जाते हैं। मिलता होगा। मैं यह नहीं कहता है कि नहीं मिलता, मिलता होगा ! मगर पहला प्रश्न जो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ वो यह है कि तुझको राम मिल गया ?

जिसको चाह राम की साधो, राम उन्हें मिल जाते हैं।
रामदास के पास राम है, और नहीं कोई पाते हैं॥

वो कहते हैं राम रामदास के पास रहता है। एक तो राम का मिलना ये समझ लो कि मैंने दातादयाल को राम या मालिक का अवतार समझा एक तो वो मिल गया इसका अर्थ ये भी समझ में आता है। मगर मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द, मर जायेगा, चार दिन की तेरी जिन्दगी है।

अन्त यहाँ से तो चले ही जाना है। यहाँ बैठे नहीं रहना। अगर झूठे मान, झूठी इज्जत, झूठी दौलत के लिये पाखण्ड जगावेगा आगे मेरा क्या हाल होगा। मुझे क्या पता जो कर्म मैंने किये हुये हैं। उनका फल मुझको मिलेगा इस वास्ते मैं डरता हूं और सचाई का ब्यान करता हूं। अपनी आत्मा से पूछता हूँ। फ़कीर चन्द तू राम को मिलने के वास्ते बचपन की आयु से निकला था, बता तुझे राम मिल गया ? दाता कहते हैं।

राम दास के पास राम है, और नहीं कोई पाते हैं।

क्या कहते हैं ? जो राम का दास है। उसके पास राम रहता है। दूसरे किसी के पास नहीं रहता क्या मतलब हुआ इसका ? यह ख्याल कि राम ही मेरे मन से निकला था। अगर मेरे मन में राम न होता तो राम का ख्याल कैसे निकलता ? तो जिस आदमी के दिल में उस राम से मिलने की चाह है। वो राम से मिलने की चाह कहाँ से पैदा हुई ? उसके अपने मन के अन्दर से पैदा हुई। इस वास्ते राम या गुरू या परमात्मा या भगवान कुछ कह लो, अगर किसी को मिलता है। तो वो जिस आदमी के दिल में चाह पैदा होती है। उस आदमी के अपने अन्तर में होता है। उसको ज्ञान नहीं होता। कि वो उसके पास है। इसलिए वह राम को ढूढ़ता है। हकीकत में वो राम उनके अपने मन से निकलता है। और जिनको राम की जरूरत नहीं है उनके मन से नहीं निकलता राम न सही कोई और चीज समझ लो। जिस चीज की जिसको चाह होती है। वह उसके अन्दर पहले ही मौजूद होती है। उस का ये पता नहीं कि वो मेरे पास है। इसलिए वह उसको बाहर ढूढता है तो बाहर के गुरू की ड्यूटी क्या है ? उस जीव को यह यकीन करा देना कि जिस राम को तू ढूढ़ता है। या जिस वस्तु की तुझको इच्छा है। वह तो तेरे पास रहता ही है। तू भ्रम में बाहर ढूढ़ता है। जैसे मेरे साथ दाता दयाल ने सलूक किया, मैं राम को मिलने निकला था पहले दशरथ का बेटा समझकर उसको पूजता था। राम की मूर्ति मेरे अन्तर या बाहर प्रकट होती थी. फिर जैसे मैं कहा करता हूं। फिर हालात और वाक्यात ऐसे हुए कि मेरे दिल में इससे उदासी आ गई। फिर मैं राम से मिलने के लिये २४ घन्टे रोता रहा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

क्योंकि ब्राह्मण था सुना हुआ था ।

नाना भाँति राम अवतारा ।
रामायण शत कोटि अपारा ।।

परिणाम स्वरूप एक दृश्य था । जिसमें दातादयाल मेरे अन्तर आये और मैंने उनको राम समझा तो वो राम कहाँ से मिला ? वो राम तो मुझे अब पता लगा कि मेरे पास पहले ही से मौजूद था । अब तुम कहोगे हम भी तो राम को तलाश करते हैं ? असल में तो राम की तलाश नहीं है हमको दुनिया की आशाओं को पूरा करने का ख्याल मिला हुआ है । कि अगर राम को पूजा करेंगे । तो दुनिया के हमारे काम बन जावेंगे । इसलिए लोग ईश्वर या परमात्मा को पूजते हैं । हम लोग मन्दिर में जाते हैं । क्या करते हैं ? माथा टेकते हैं । मेरे पुत्र हो जावे मेरी लड़की की शादी हो जावे, मेरी बीमारी हट जावे । मेरा ये हो जावे मेरा वो हो जावे । यही कुछ जब हम इन वस्तुओं को माँगते हैं तो वास्तव में हम राम को, परमात्मा को या गुरू को तो नहीं चाहते । उनके सहारे हम अपनी दुनिया की मतलव की चीजें माँगते हैं कि हमको ये चीज मिल जावे । अगर प्रबल इच्छा है तो वो मिल भी जाती है । माँगो और मिलेगा । इसका प्रमाण एक तो मेरे जीवन का दूसरे तुम लोगों के अनुभवों का है । कि लोग मेरे रूप से दुनिया का कोई काम माँगते हैं । उनके अन्दर मेरा रूप प्रगट हो जाता है, वही उनको दवाई बता देता है । कहीं उनकी और इच्छा पूरी कर जाता है । मगर मुझे बिल्कुल कोई पता नहीं होता । तो सिद्ध हुआ कि मनुष्य जो कुछ चाहता है । वह उसके अपने पास पहले ही है । इसी प्रकार मनुष्य जिस राम सतगुरू या अल्ला कुछ कह लो, की तलाश करता है वह बाहर नहीं है । वह उसके अपने ही मन के अन्दर है । दूसरे अर्थ में उसका अपना मन ही राम है । क्योंकि जो लोग मुझ फकीर चन्द को गुरू मानकर अपने अन्तर पैदा करते हैं, मैं तो होता नहीं ? तो वो जो फकीर चन्द उनके अन्दर पैदा हुआ और उनका काम कर गया । वह कौन निकला ? उनका अपना मन निकला और तो कोई नहीं था ? यही एक राज था भेद था जिसको भारतवर्ष में किसी मत मतान्तर न खोल कर नहीं बताया

इशारा जरूर सबने किया मगर खुल के नहीं बताया। खुल के बताने में नुकसान भी है। उसकों मैं जानता हूँ। आदमी को जो आनन्द मिलता है। ये अज्ञान में है। ज्ञान में आनन्द नहीं, अज्ञान में आनन्द है। मगर मैंने इस लिये खोला कि इस अज्ञान के कारण इन्सानी नसल आपस में बंट गई, इसी अज्ञान की बजह देश के विभाजन समय में क्या कुछ नहीं हुआ, सिर कटे, तुम लोग जो पाकिस्तान से आये हो तुम्हारा हाल में क्या हुआ? जो मुसलमान यहाँ से गये थे उनके साथ क्या बीता? क्यों हुआ क्योंकि उनको अज्ञान था हिन्दुओं में अज्ञान था और मुसलमानो अज्ञान था उस हालत को देखकर चूँकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है।

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल स्नेही।

इसलिए मैंने उस भेद को जो कबीर साहब ने भी धर्मदास को बताकर छुपाकर रखने को कहा और राधास्वामी मत वालों ने भी कह दिया।

सन्त बिना कोई भेद न जाने,
सो तोह कहें अलग में।

मैंने जो पर्दे का तरीका, क्योंकि दाता ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना उसको तोड़ दिया। ताकि जो दुनिया के समझदार आदमी हैं ये इस मजहबी दुनिया और अज्ञान के चक्कर में आकर इनका आपस में द्वेष, घृणा, ईर्षा और झगड़े न हों दूसरी गद्दियों की तरह अगर मैं भी इस वात का पर्दा रखता, तो आज मैं लाखों करोड़ों का मालिक होता। आज जो यह शब्द पढ़ा गया, ये मेरे ऊपर ही घटता है। क्योंकि मैं राम को मिलने निकला था अगर मैं राधास्वामी मत या कबीर साहिब की पुस्तकें पहले पढ़ता तो मैं धर्म से कहता हूँ। कभी भी सन्त मत में शामिल न होता। प्रत्येक आदमी को अपने अपने मजहव की टेक होती है। मैं हिन्दू था मुझे ब्राह्मण पने की टेक थी और इन राधास्वामी मत और कबीर साहब की बानियों ने कहा है कि हिन्दू भी भूल गये, मुसलवान भी भूल गये, सूफी भी भूल गये, बुद्ध, जैन और वेदान्त सव ही भूल गये। इन्होंने सबकी ऐसी तैसी करी फिर तो मैं रोया

करता था। कि मैं कहाँ फँस गया, वह क्या चीज है जो यह सन्त मत बताता है। मगर अब मैं कहता हूं। कि जो कुछ इन्होंने कहा बिल्कुल ठीक है। सन्त मत जो कहता है वो ये कहता है।

जिनको चाह राम की साधो, राम उन्हें मिल जाते हैं।
रामदास के पास राम हैं और नहीं कोई पाते हैं ।।

सन्त मत ऐसा क्यों कहता है ? क्योंकि वह राम का दास बनकर याद करता है। तो राम कहाँ से निकला ? ऐ इन्सान तू राम को बनाने वाला है। ऐ इन्सान तू अपने ही अज्ञान से, व अपने ही दुनिया की इच्छाओं के लिए, या अपने ही लाभ के लिए तू राम को याद करता है। वह बाहर तो है नहीं वो तो तुम्हारे अन्तर रहता है। इसका प्रमाण मुझे तुम लोगों से मिला, लोग मुझे गुरु समझकर या कुछ समझ के याद करते हैं। उनके अन्दर मेरा रूप प्रगट होता है। और उनके काम कर जाता है। तो तुम मेरे पैदा करने वाले हुए कि न हुए ? मैं तो गया नहीं, ये मुझे पता है। तो मुझे यकीन होना ... फ़कीर चन्द को पैदा करने वाले सन्त सगी थे, तभी तो मैं कहता ...ल के महात्माओं, गुरुओं, मजहब वालों और पंथ वालों ने ... लुटा है। और मूर्ख बनाया है, और हमें धोखा दिया ... तुम्हारे सारे कर्म ले लेता है। और हम लोग

कल का ये तमाम गुरुमत ही बाबला है। मगर ये बात इतनी ऊँची है कि प्रत्यक मनुष्य समझ नहीं सकता। तो जो मनुष्य राम को याद करता है। वह राम उसके पास है और तुम्हारी अपनी हस्ती जो है। ये अगर गलती नहीं है। तो राम से बड़ी है। क्योंकि तुम राम को पैदा करने वाले हो, तुम्हारे दिल के अन्दर से राम पैदा हुआ है। इस बास्ते सन्तों ने मनुष्य का दरजा सबसे ऊँचा रखा है मगर किसका, जिनको दुनिया की आशायें हैं। उनका नहीं ? आप लोग दुनियादार हैं। आप या ये और दुनिया जो राम को गुरू को देवी हनुमान को, या किसी और को याद करती और पूजती है वो राम को मिलने के लिये नहीं याद करती और पूजती है। वह तो अपनी दुनिया की आशाओं और मतलवों का पूरा करने के लिये याद करता और पूजता है। मेरे पास कितने ही आदमी आते हैं। बाबा जी हम बीमार हैं प्रसाद करदो बाबा जी। मेरी लड़की की शादी करना है। मैं फोटो लेकर आया हूं। बताओ इसके साथ शादी कर दूँ या न कर दूँ। ऐसे आदमी गुरु के दास नहीं हैं। न गुरु के दास हैं, जो आदमी इस प्रकार गु... या किसी के पास जाकर अपनी दुनिया की चीजें माँगते हैं वह तो उन चीजों के दास है जिनको वह माँगते हैं। वह जो दुनियादार है। और ...

PURNADAYAL

और फिर क्या होता है ? सरलता से राम पा लिया देखा देखी का अर्थ है मेहनत और कोशिश नहीं करनी पड़ी, मैं अगर शुरू में गुरूमुख होता तो मैं इतनी मेहनत न करता, इतना अभ्यास न करता, गुरू के बचनों पर विश्वास नहीं था, अगर होता तो मैं इतनी मेहनत क्यों करता । अब ये तुम लोगों से मुझे पता लगा कि जिस राम को मैं ढूढ़ता था, वह तो मेरी अपनी ही जात है । मेरा अपना ही आद हैं । अपना ही आपा है । परम तत्व है । वो ही राम है । कोई उसे अल्लाह कह देता है, कोई राम, कोई अनामी या राधास्वामी कह देता हैं । कोई कुछ कह देता है । अपना अपना ख्याल है, शब्दों की जड़ का खेल है ।

राम नहीं तीर्थ में रहते, राम बरत के साथ नहीं ।
रामदास के हाथ राम हैं, औरों के वे हाथ नहीं ।

कितना साफ है, तो तुम लोग, अगर कोई उस मालिक को मिलना चाहे तो उसका इलाज क्या है ? राम को मिलने की चाह अज्ञान है । भरम है । संशय है । किसी पुरुष के सतसंग में जाओ उसके सतसंग के बचनों से तुमको असल और सच्चाई का पता मिलेगा अगर तुम को अशांति है । तो क्यों ? क्योंकि तुम्हारे मन में दुनिया का मोह है । मैं अफसोस करता हूं, मैं ऊँचा बोलता हूँ क्योंकि तुम्हारे मन में दुनिया का मोह है । मैं अफसोस करता हूं मैं ऊँचा बोलता हूँ । प्रत्येक आदमी मेरी बात को अकल से तो समझ जायेगा मगर अमल से नहीं समझेगा अमली तौर पर से नहीं आ सकता । जब तक उसका पूर्ण वैराग्य नहीं है । जिसको दुनिया की चाह । दुनिया की आशायें हैं । दुनिया के पीछे फिरता है वह लाख कहता फिरे राम मेरे पास है, उसके मन को चैन नहीं है । अपने मन के अन्दर दुविधा में रहेगा कभी दुखी रहेगा । कभी सुखी हो जायेगा । इसलिये ये सन्तों की शिक्षा सब दुनिया के लिए नहीं है । ये केवल उनके लिये है जिनको यह अनुभव हो चुका है कि मन के चक्कर मे सुख नहीं है और इस संसार में कोई किसी का नहीं हैं सब अपने मतलब के साथी हैं । अब मैं यहाँ सतसंग कराता हूँ, कोई तुम पर एहसान करता हूं । एक तो अपना कर्तव्य पूरा करता हूँ । दूसरे चार पैसे तुम लोगों से इकट्ठा

करता हूँ। क्षमा करना मैं बात सच्ची बात कहता हूं। अब मैं २८ तिथि को बाहर जा रहा हूं। २५ दिन बाहर दौरे पर रहूँगा, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ बेशर्म तू बाहर क्यों जा रहा है ? मेरी आयु देखो ९३ वर्ष की है। मन्दिर के लिये पैसों के लिये जा रहा हूँ। ये मेरे खोटे कर्म थे पिछले जो मैं यहां फँस गया मन्दिर बना के। मगर एक ही खुशी है कि मैं अपने लिए कुछ भी नहीं करता और दूसरे ये कि सचाई ब्यान करता हूँ। जब सब आदमी स्वार्थ के लिए हैं। तो मैं भी स्वार्थ से खाली नहीं केवल मेरा स्वार्थ ये है कि मेरी अपनी जात के लिये कुछ करना तो स्वार्थी तो मैं भी हूँ।

बुन्द में सिन्ध सिन्ध में बुन्द, बुन्द सिन्ध दोऊ एक हुए।

जब यह ज्ञान हो जाता है तो क्या हो जाता है जिस प्रकार समुद्र बूँदों का मेल हे। बहुत सी बूँदें इकट्ठी होती हैं। वह बूँद अपने अज्ञान से अलग हो गई, जब उसको यह यकीन हो जाता है। ज्ञान हो जाता है। समझ आ जाती है। फिर बूँद सिन्ध में मिल जाती है। अर्थात बूँद और सिन्ध एक हो जाते हैं। अपने अज्ञान की बजह से हम अपने आपको मालिक से अलग समझते हैं। अज्ञान का पर्दा है। जब अज्ञान का वो परदा उठ गया और यदि सचाई पसन्द मनुष्य है। तो वह बूँद जो जज है, हिस्सा है कुल में मिल जाती है। One ness आ जाती है एक तत्व रह जाता है। एक हो जाते हैं अतः

बुन्द में सिन्ध सिन्ध में बुन्द, बुन्द सिन्ध दोऊ एक हुए।
बुन्द सिन्ध का झगड़ा मन में, उनके लिए अनेक हुए॥

ये बूँद और सिंध का झगड़ा मन में है। जब मन ने भेद को समझ लिया द्वैतपन जाता रहा ये मेरी समझ में नहीं आता था। मैंने बड़ा प्रेम किया है दाता से, जब मैं प्रेम करता था और इनको राम समझ के बाहर पूजता था तो मुझे लिखा करते थे।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

इस वास्ते दुनिया में सतसंग की महिमा नाम से अधिक है। क्योंकि सतसंग से ही नाम मिलता है। मगर तुम लोगों ने ये समझा हुआ है। कि सतसंग में जाओगे तो गुरू तुमको बोलेगा कि फलाँ वरणाँत्मक नाम से सुमिरण किया करो, तुम लोगों ने नाम को ये समझा हुआ है। जिस तरह तुम्हारे छोटे बच्चों के लिये पहाड़े हैं। इसी प्रकार सुमरण ध्यान भजन जो हम करते हैं। ये भी पहाड़े हैं। स्वामी जी ने कहा है —

बिन सतसंग जो शब्द में पचते वो भी मूर्ख जान।

जो सतसंग नहीं करते और केवल शब्द का अभ्यास करते हैं। स्वामी जी जो कहते हैं कि वो भी मूर्ख हैं मगर शर्त ये है कि सतसंग कराने वाला पूरा हो। हम लोग तो सतसंग इसलिए करते हैं कि हमारी सभा बन जावे। लोग मेरी कदर को मान करें। लोग मेरा मन्दिर बना दें। लोग मेरा ये कर दें, लोग मेरा वो कर दें। ये सब हम लोग सब इसी मतलब के लिये काम करते हैं।

राधास्वामी सतगुरु आये भेद दिया पूरा—पूरा।

जब कभी मैं अपने आपको कहता हूं। कि मैं अनामी धाम से अवतार लेकर आया हूं तो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तू अहंकारी तो नहीं हो गया नहीं, केवल मैं अनामी धाम से आया, सब दुनिया ही वहाँ से आये है हमारा आद ही वह अवस्था है किसी ने अनामी धाम कह दिया किसी ने राम कह दिया बात एक ही है तो हम सब वहाँ से आये हुए हैं। तो मैं क्या करता हूँ ? क्योंकि गुरु के रूप में काम करता हूँ। मैं दिखावे का गुरु नहीं बना, और गुरुओं की तरह नाम नहीं देता। जो मैं मुँह से कहता हूँ मेरा यही नाम दान है। जिसकी बात समझ में आ गई लाभ उठा लिया।

राधास्वामी सतगुरु आये भेद दिया पूरा पूरा।

अब आप समझ लो कि मैं भेद पूरा देता हूं या नहीं देता हूँ कोई बात छुपाकर नहीं रखता, कोई जाती मतलब के लिए कुछ नहीं करता कोई जाती गरज नहीं है। ये ठीक है कि मन्दिर में मुझे पैसा चाहिए मगर मैं हेर फेर कर बात नहीं कहता कोई दे या न दे बात सच्ची कहता हूं। इसलिए मैं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अपने आपको राधास्वामी दयाल सन्त कबीर और गुरु नानक कहता हूँ। ये नहीं कि उन किसी की रुह मेरे अन्दर आई हुई है। बल्कि उनकी शिक्षा को मैंने समझा है जो कुछ उनका भाव था, वह मैं समझ गया और वो आप को बताता रहता हूं।

ये तो हुआ परमार्थ का सतसंग, अब तुम हो दुनियादार तुमको परमार्थ से कोई मतलब नहीं। कोई कोई है जिसको राम से मतलब होगा, तुम दुनियादार हो, तुम दुनियादारों के लिए मैं एक आसान तरकीब बताता हूं। कि तुम अपने ख्याल को ठीक रखो, अपना भला चाहो. अपने परिवार का भला चाहो, अपने घरों में प्रेम औ शान्ति रखो, दुश्मनी, झगड़ा, जहाँ तक हो सके मत करो। अगर किसी की नहीं बनती अलग हो जाओ वो अच्छा है बजाए इसके कि रोज तुम cold war घर में कर लो, रोज का जो झगड़ा है ' मन कुढ़ता रहता है। झगड़े होते रहते हैं देवरानी जेठानी की लड़ाई, सास वहू की लड़ाई, पुरुष स्त्री की लड़ाई ये झगड़े ही झगड़े हैं सारे तो तुम कैसे उम्मीद कर सकते हो कि तुम्हारा दुनिया जिन्दगी सुख से गुजरेगा, नहीं गुजर सकती, क्योंकि तुम्हारे ख्याल में ताकत है। जैसा ख्याल वैसा हाल जैसी मति वैसी गति जैसी करनी वैसी भरनी। ये सब माया देश है। इसमें संस्कार है। जिस ख्याल से जिस विचार से तुम बच्चे पैदा करते हो वो बच्चों में असर आवेगा। आज कल हम में से कोई ही होगा वरना सब स्वाद के लिए विषय भोगते हैं फिर बच्चे आ जाते हैं। इस तरह दुनिया में बेजबत औलाद पैदा हुई है। इनके दिमाग में इतनी ताकत नहीं है कि ऊँच नीच सोच सके कि क्या करें न हकूमत वालों में और न जनता में, हमारा घर है, एक मनुष्य चार सौ पाँच सौ रु० वेतन लेता है। उसके चार पाँच बच्चे हैं। अगर प्रत्येक बच्चा जिद करे अपनी खुद गरजी करे कि मुझे साईकल ले के दो, रेडियो ले के दो, या ये वस्तु ले के दो वो चार सौ रुपये में से कहाँ से देगा। ऐसे ही देश के पास जितनी रकम है उसी को देगा। आजकल जो भी आता है हड़ताल करता है, मैं कहता हूँ, ये सब हड़ताल करने वाले पाप के भागी बनेंगे, कोई बच नहीं सकता। क्योंकि हम अपनी

गरज के लिये दूसरों का नुकसान करते हैं। इसलिए ये कहानी दुनिया का ज्ञान है। जो मैं कहता हूँ। मैं चाहता हूँ मेरे ख्यालात इन लोगों तक पहुँचे। अगर यही हड़तालें घेराव और झगड़े होते रहे तो देश को बहुत नुकसान पहुंचेगा। ख्याल की ताकत बड़ी भारी है। जैसी करनी वैसी भरनी। मेरे पास जितने सरकारी नौकरी वाले आते हैं। रेलवे के डाकखाने के मैं कहा करता हूँ भाइयो ! अगर तुमने घेराव और हड़तालें करनी हैं तो मेरे पास न आया करो। मुझे क्यों बदनाम करते हो। ऐसा करना महापाप है। ये लोग जो सरकारी सम्पत्ति जलाते हैं। साठ करोड़ लोगों का पाप उनको आता है। क्योंकि ये किसी एक मनुष्य की सम्पत्ति नहीं है। साठ करोड़ आदमियों की है। अन्त में मैं चाहता हूं। कि जिस जिस इच्छा के लिये तुम आये हो, मालिक करे तुम्हारी इच्छा पूरी हो। इसके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है। न मैं कुछ कर सकता हूं। सच्चे बनो, ध्यान करो और माँगा करो। अपनी शक्ति के अनुसार व्यय किया करो, आय से अधिक खर्च मत करो।

लोक लाज काज बिगाड़ा जी।
मोहे जग फन्दा डाला जी।

लड़कियों की शादी पर माँ बाप करजा उठाकर व्यय करते हैं। और पीछे से रोते हैं करजे से बचो, अगर किसी से कहो तू औरत की कमाई खाता है। औरत की कमाई खाना बुरा शब्द है, उसे बुरा लगेगा मगर आजकल के नौजवान, ये लड़के जो दहेज माँगते हैं, ये स्त्री की कमाई नहीं खाते तो क्या खाते हैं ? जो लड़का अपनी ससुराल से दौलत माँगता है। वो औरत की कमाई खाता है। ससुराल से पैसे माँगना बड़े शर्म की बात है। मैं घर की बात बताता हूँ। मुझे मजहबी दुनिया का खबत था मैं टीका साहित्य यजुर्वेद पढ़ना चाहता था, दस रुपये मूल्य था, माँ से कहा दस रुपये दे दे। मां ने कहा मेरे पास नहीं है। तो मैंने अपने ससुराल वालो को चिट्ठी लिखी कि मुझे यजुर्वेद चाहिये दस रुपये भेज दो। माँ को बताया कि मैंने अपने ससुराल वालों को चिट्ठी लिखी है। कि दस रुपये भेज देवें। मेरी माँ ने अपना सिर मेरे पाँवों पर रख दिया, और कहा बच्चा, हमारी इज्जत रख अगर जरूर

ही मँगवाना है तो ये ले अपने सुहाग की नथ उतारकर मुझे दे दी और कहा गिरवी रखकर दस रु० ले आ । जब वेतन आवेगा तो दस रुपये उसे दे देंगे, वो जमाना भी था, और आज का जमाना क्या है । लड़कियों और औरतों को मजबूर करते हैं कि जाओ अपने माँ बाप से रु० लेकर आओ । अब देखो वो समय भी था । कौन औरत है, जो अपने सुहाग की नथ दे देती है । और मैं भी वे समझ था । सुनार के यहाँ नथ रख दी और दस रुपया लेकर वेद ले आया । जब वेतन मिला तब नथ छुड़ाई, फिर जब मैं पंथ में आ गया तो वेद मैंने दातादयाल को दे दिया, आज मैं पश्चाताप करता हूँ कि मैं माँ की नथ लेकर वहाँ दे आया । दूसरी मिसाल और सुनो १९११ में मेरी दूसरी शादी हुई । मेरे ससुर ने अपनी लड़की का सकल्प मुझे दे दिया । मैंने ले लिया, फिर उसने दहेज का संकल्प किया । मुझे कहा हाथ कर मैंने कहा मैं नहीं करूँगा मेरा बाप पीछे बैठा था उसने मेरी पीठ में मुक्का मारा, मैंने कहा पिताजी, मारो या जो चाहो करो मैं दहेज दान का संकल्प नहीं लूँगा । एक संकल्प किया है । अगर स्त्री के साथ निभ गई तो अपना फरज पूरा कर जाऊँगा । और आज कल क्या हो रहा है । ये दहेज दान के झगड़े ही अशाँति और घबराहट का मुख्य कारण हैं । मैंने अपनी लड़कियों की शादी की मैंने किसी को दहेज दान फा संकल्प करके नहीं दिया, दाज दान का मैंने संकल्प नहीं कराया । मेरे जिम्मे चूँकि जगत कल्याण की ड्यूटी थी । इसलिए जो बात मेरी समझ में आई है । ये आप लोगों को कहता रहता हूं ।

सबको राधास्वामी !

—०—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

प्रवचन

परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर दि० ३१-१२-७८

गुरु नाम मिला मुझको प्यारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।
सब नामों से है यह न्यारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥१॥
दल सहस कमल सुमिरन साधा, त्रिकुटी [illegible] ध्यान को आराधा ।
सुन्न महासुन्न दुबिता जारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥२॥
सुरत शब्द जोग मत अति है सुगम, कोई अधिकारी पाता है गम ।
गुरु ने मुझे दिया मरम सारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥३॥
जगमग जगमग ज्योती दमकी, ज्योती विचित्र घट में चमकी ।
हुआ मगन जो देखा चमकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥४॥
दल सहस कमल घंटा बाजा, और शून्य में रारंग धुन गाजा ।
त्रिकुटी में गरजा ॐकारा, राधास्वामी राधास्वामी ॥५॥
ब्रह्मांड की थी यह त्रिलोकी, यह त्रिलोकी मैंने छोड़ी ।
चौथे पद सुरत को गारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥६॥
चौथे पद नाम की धुन पाई, प्यारी धुन यह मुझको भाई ।
सुनी उसे भँवर पद से पारा, राधास्वामी ॥७॥
सतलोक में वीन की गति प्रकटी, निरखी वहाँ सतगुरु की भृकुटी ।
सतगुरु मेरे होगये रखवारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।८॥
लख अलख की शोभा बहुन्यारी, गम अगम की महिमा थी प्यारी ।
ऊँचे चढ़ होगया भव पारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥९॥
गुरु नाम की धुन पहचान लिया, प्रकाश में रूप को जान लिया ।
मिल गया काल से छुटकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥१०॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी मैं गाता हूँ ।
मैं तरा साथ सब को तारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥११॥

राधास्वामी ।

कर्म का चक्कर सबको लिए फिरता हूँ । बुढ़ापा है, ९३ साल की आयु होगई । काम करता हूं । क्या करूं बिना काम के शरीर भी नहीं रहता । मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । यह शब्द जो पढ़ा गया, उसमें बहुत से नुकते हैं । अगर मैं यह समझूं कि किसी को गुरु, राम राम नाम जपना बता देता है यह किसी को कहता है कि अमुक नाम जप, वह असल में वर्णात्मक नाम हैं, वह नाम नहीं हैं वह तो केवल मन को इकट्ठा करने और मन से ऊपर आने के लिए एक साधन है । अब यद्यपि मैं राधास्वामी मत का हूँ मगर मैं पक्षपाती और टेकी नहीं हूं । एक आदमी राधास्वामी नाम लेले, कोई हर्ज नहीं, राम राम करके मन को इकट्ठा करले मगर जो असली चीज है, वह अपने अन्तर सुरत से शब्द को सुनना है । इसका नाम नाम है । मन से और शरीर से नहीं । शब्द तो अनेक प्रकार के हैं । मगर असली शब्द कौनसा है, जो सुरत से सुना जाता है ।

आप लोगों को शायद पता न लगे कि सुख क्या वस्तु है । सुख वह चीज है जो हमारे अन्तर सब कुछ देखती है और साक्षी है सब चीज नाश होने वाली है मगर वह चीज जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है उसका नाश नहीं है । आदमी बीमार होता है । बीमारी आती है और चली जाती । आज धन आता है चला जाता है, गुरु स्वरूप आता है और चला जाता है । जो चीज आती है वह तो जायेगी । अभ्यासी तो सारा जीवन इसी खब्त में मर गये कि हमको यह दिखाई नहीं देता या हमने घन्टा शंख नहीं सुना । फिर मैं अपने आपसे पूछता हूं ? क्यों फकीरचन्द ! तुम्हें वह नाम प्राप्त होगया ? जहाँ तक मेरा अपनी निजी अनुभव है, वह मानने को विवश करता है कि मैं उस नाम को समझ गया । कैसे समझा ? तुम लोगों से समझा । मैं इस आयु में आप लोगों को अपना सतगुरु मानता हूं । दया तो दाता दयाल की है । यह नहीं कि मैं दाता दयाल को छोड़ गया । उनकी दया है । यह काम जो मुझे दिया था यह केवल इसी वास्ते दिया था कि मैं समझ जाऊं कि राधास्वामी नाम क्या चीज है ? अब जब मैं अपने अन्तर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

जाता हूं तो मन को छोड़ जाता हूँ। आज साढ़े नौ बजे जगाने पर उठा इतनी लम्बी समाधि कभी नहीं गया। होश ही नहीं आई। तो राधास्वामी नाम क्या हुआ? सुरत से शब्द को सुनना। कोई आदमी बेशक जवान से राधास्वामी कहें या न कहें अगर वह सुरत से शब्द को सुनता है तो वह राधास्वामिया है और अगर कोई राधास्वामिया कहलाता है मगर उसे वह चौथे पद का नाम नहीं मिला और वहाँ नहीं पहुंचा तो वह राधास्वामी मत का नहीं है। बिल्कुल साफ बात है।

गुरु नाम मिला मुझको प्यारा राधास्वामी राधास्वामी।

गलती में न पड़ना। जो हम मुँह से राधास्वामी राधास्वामी कहते हैं यह नाम नहीं है। यह तो एक दूसरे को समझाने के लिए एक (टैक्नीकल) शब्द है। इससे अधिक और कोई कुछ नहीं। राधास्वामी नाम वह है जो अजर अमर और अविनाशी है। वह कैसे? मैं पहले राम और कृष्ण का ध्यान करता था। राम कृष्ण आते थे और चले जाते थे। फिर मैंने दाता दयाल के रूप का ध्यान किया। आता था चला जाता था। मगर वह चीज जो मेरे अन्तर रहती है और शरीर के बोधमान, मन के विचार और आत्मा के आनन्द की साक्षी है अर्थात प्रतीक्षा करती है वह खुदा अजर अमर है। उसका अपने आप में वापिस जाकर अपने रूप में ठहर जाना, उस अवस्था का नाम राधास्वामी है। मैंने यह समझा है। मैं चाहता हूँ कि अगर मैं गलत हूं तो ये वर्तमान राधास्वामी मत वाले मेरे सामने आकर बात करें। किताबों में मेरा खण्डन कर दें। मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मुझे राधास्वामी मत से मिलेगा, मैं संसार को बता जाऊँगा।

सब नामों से है प्यारा, राधास्वामी राधास्वामी।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछना चाहता हूं कि क्या सचमुच राधास्वामी सब नामों से प्यारा है? अब आप देखिये। जितने आप नाम धारिये नाम जपते हैं, कोई वाहे गुरू का नाम जपता है, कोई सतश्री अकाल या पाँच नाम का सुमिरन करता है। उनसे पूछ देखो कि क्या वे नाम से घन्टा, शंख, मृदंग तुम्हारे अन्तर प्रगट होते थे, क्या उनके सुनने से तुम्हें पता लग गया कि तुम

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अब संसार से पार हो गये ? सब मानेंगे कि हम नहीं हुये । मालिक से मैं प्रार्थना करता हूं कि दाता ! मुझे क्षमा करना । अगर मैं तेरे राधास्वामी मत के विरुद्ध नहीं हूँ । बल्कि मैं राधास्वामी मत की असलियत को बता रहा हूँ । जब तुम लोगों से सुना कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता तो जो कुछ मेरे मन के अन्तर नहीं जाता तो जो कुछ मेरे मन के अन्तर फुरना फुरती थी, शब्द सुनते थे, प्रकाश देखता था, सब छोड़ गया । मगर वह चीज जो इन्हें देखती थी, वह अब भी मौजूद है । शायद इसी वास्ते ऋषियों ने कह दिया हो कि आत्मा, अजर अमर और अबिनाशी है । क्योंकि वह चीज सदा रहती है वरना आत्मा के अर्थ अब गति और मनन के अर्थ सोचना है । जो चीज गति और मनन में रहती है वह आत्मा है । अगर हम कहें कि आत्मा एक है तो उत्साह नहीं पड़ता क्योंकि कितनी ही आत्माएँ हैं । आप देखते हो, कितने आदमी बैठे हुये हैं सब आत्म स्वरूप हैं । इस वास्ते सन्तमत की शिक्षा का असली निचौड़ यह है । मैं जानता हूँ जहाँ मैं बोलता हूं, संसार इसका अधिकारी नहीं है । मगर किसी पन्थ में शामिल होना हजारहा दर्जे अच्छा है सिवाय इसके कि धोबी का कुत्ता घर का न घाट का रहे मगर हमें इन सन्तों ने धोबी का कुत्ता बना दिया । कैसे ? जो नाम की असलियत थी इसका तो हमें पता नहीं लगा और बाकी जो हमारा देवताओं के मन्दिरों में जाना, पूजा पाठ करनी इससे कुछ लाभ तो होता वह इन सन्तों ने हमसे छुड़ा दिया और उनकी बजाय अपना रूप पेश कर दिया कि हम भगवान हैं, हम यह हैं और वह हैं । अगर भगवान हैं तो उन पर विपत्ति क्यों आई ? कुछ कर दिखावे यह सब ढोंग है ।

राधास्वामी वह अवस्था है जहाँ हमें शरीर, मन और प्रकाश का कोई भी खेल दिखाई नहीं देता, सब कुछ छोड़ जाते हैं, बाकी जो कुछ रह जाता है उस अवस्था का नाम राधास्वामी है । मैंने ऐसा समझा है । मैंने आज दिन तक जो कुछ संसार को कहा, किताबों के हिवाले नहीं दिये कि गीता यह कहती है पुरान, रामायण भागवत या पहली बादशाही यह कहती है । मैं दूसरों का अनुभव वर्णन नहीं करता । मैं वह कहता हूं जो मैंने अपने अन्तर

देखा । अब मेरी पिछली अवस्था आ रही है ।

Semi consciousness में रहता हूँ । रात को Semi conciousness रहती है । अन्तर जागता हूँ बाहर की कुछ होश नहीं रहती । मैंने राधास्वामी नाम को यह समझा है । मैं आज यह सतसंग इसी विचार से दे रहा हूं । कि अगर कोई राधास्वामी मत का गुरू समझता है कि मैं गलती पर हूं तो मेरा खण्डन करदे ताकि मुझे पब्लिक को गलत ढंग से गुमराह करने का दोष न लगे । मेरे साथ जो बीती है [illegible] कहता हूं ।

दल सहस कमल सुमिरन साधो, त्रिकुटी चढ़ ध्यान को आराधा ।

जो आदमी संसार की इच्छायें और आवश्यकतायें चाहते हैं, समृद्धशाली बनना या कुछ चाहते हैं तो वे ऊपर न जायें सहस दल कमल में अभ्यास किया करें । जो तुम्हें जो तुम्हारी अपनी जात के लिए संसार चीजें चाहिए चाहिए वे पूरी हो जायेंगी । यह **Law** है । त्रिकुटी में अभ्यास से आदमी को हर सूक्ष्म से सूक्ष्म बात की समझ आती है कि यह बात ऐसे नहीं ऐसे है । त्रिकुटी में अनुभव जागता है और हर चीज को समझने के योग्य हो जाता है ।

सुन्न महासुन्न दुचिता जारा, राधास्वामी राधास्वामी ।

त्रिकुटी में जब मूर्ति बन जाती है तो फिर उसे यत्न करने की आवश्यकता नहीं होती । वह जो स्वामी, सेवक और प्रेम की दशा होती है उसमें से प्रेम का दर्जा कट जाता है । क्योंकि वह चीज उसके सामने आ जाती है । उस अवस्था को हम सुन्न कहते हैं अर्थात शरीर और मन की सारी इन्द्रियें ये सुन्न खामोश हो जाती है । ये **Function** काम नहीं करती और जब वह उस मूर्ति की ओर अधिक ध्यान देगा तो एक समय आयेगा वह मूर्ति दिखाई नहीं देगी । वह गायब हो जायेगी और अँधेर आ जायेगा । महासुन्न में अँधेर होता है । यह मन ही सहस–दल–कमल, त्रिकुटि, सुन्न और महासुन्न है । यहाँ तक हरएक धर्मशाला पहुंच सकता है चाहे किसी ढंग से पहुँचे । मगर अगर किसी से गुरु नहीं मिला हुआ है तो वह इससे आगे नहीं जा सकता । इससे आगे कौन पहुंचाता है ? गुरू ! वह कौन गुरु है ?

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

चन्द गुरू है जो तुम्हें महासुन्न से आगे निकलेगा ? नहीं। बाहर के गुरू ने तुम्हें संकेत करना है। कि ऐ दीवाने ! यह महासुन्न तक जो तेरी समाधि लगी है, प्रेमी, प्रीतम और प्रेम तू ही हर जगह पर हो था। सिवाय तेरे और कोई नहीं। मगर उस सेवक रूप को दरसाने के लिए यह शब्द गुरू आता है। शब्द योग सुरत से सुना जाता है। जो निचले शब्द हैं वे मन और सुख दोनों से सुने जाते हैं। मगर असली नाम वह है जो सुरत से सुना जाये।

सुरत शब्द जोग अति है सुगम, कोई अधिकारी पाता है गम।

वह कहते हैं, यह बड़ा सरल है। कोई अधिकारी हो जिसे इस चीज की इच्छा हो। वह इस चीज की जल्दी प्राप्त कर सकता है।

गुरु ने मुझे दिया मरम सारा. राधास्वामी राधास्वामी।

सबके लिए नाम नहीं है। नाम की महिमा बड़ी है। मगर किनके लिए ? जो अधिकारी है और उसकी शर्तें क्या हैं ?

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आशा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

जगमग जगमग ज्योति दमकी, ज्योति विचित्र घट में चमकी।
हुआ मगन जो देखा चमकारा, राधास्वामी राधास्वामी॥

यह महासुन्न से आगे का दर्जा है क्योंकि मन तो छूट गया। यह सन्तमत इतना सहल है अगर कोई समझ जाये तो। मगर उनके लिए नहीं है जो धन या संसार चाहते हैं।

दल सहस कमल घंटा बाजा, और सुन्न में रारंग धुन गाजा।
त्रिकुटि में गरजा उँकारा, राधास्वामी राधास्वामी॥
ब्रह्मण्ड की थी वह त्रिलोकी, यह त्रिलोकी मैंने छोड़ी।
चौथे पद सुरत को गारा, राधास्वामी राधास्वामी॥

यह जो चौथे पद का नाम है, मैं इसे आसान तरीके से समझाता हूँ। तुम जागते, सोते और सुषप्ति में जाते हो। इन तीनों से परे एक और अवस्था है जिसे हम तुरिया पद कहते हैं। वहाँ न आदमी जागता है, न तरवतर होता है और न वेखवर होता है। वह इन तीनों से बिल्कुल अलग नहीं होता

मगर उनके प्रभाव को छोड़कर जिसका सहारा लेता है वह चौथा पद इन गुरुओं के पास किसलिए भटकते फिरते हो। अपनी सम्पत्तिएँ खोते हो, नाक रगड़ते हो। तुम्हें क्या मिलेगा ? जो तुमने कर्म किए हुए हैं अन्त में भोगना पड़ेगा। जब ये सन्त अपनी बीमारी को ठीक न कर सके तो सतसंगी को ठीक न कर सकेंगे। यह जितना खेल है सब तुम्हारी माया विश्वास और ब्रह्म का है और कुछ भी नहीं। बिल्कुल सच्ची बात बताता हूं।

चौथे पद नाम की धुनि पाई, प्यारी [illegible] मुझको भाई।

आदमी को चाहिए कि पहले कुछ दिन सतसंग करे। जब उसका मन नेकी की ओर आने लग जाये और सच्ची दिलचस्पी हो जाये तो उसे नाम देना चाहिये। अगर तुम्हारा मन गन्दा है और तुम इसलिए नाम जपते हो कि तुम्हारी सारी गन्दगी दूर हो जाये तो गन्दगी दूर हो जायगी। नाम का तो यह प्रभाव है कि जो नाम से माँगो मिलता है। ससार ने इसके अर्थ और समझे। मैं यह कहता हूँ कि जब तुम्हारे अन्तर ध्यान प्रकट होगा तुम्हारी वृत्तिएँ इकट्ठी होंगी, तुम्हारी विचार शक्ति बढ़ जायगी तुम्हें जो कुछ मिलेगा वह तुम्हारी विचार शक्ति के बढ़ने का फल मिलेगा न कि फकीरचन्द या और किसी गुरु ने तुम्हें देना है। मैं जो मुँह से बात कहता हूँ यही मेरा नाम दान है तुमको, मुझको जो कुछ मिलता है तुम्हारी **Concentation** एकाग्रता से मिलता हैं। फोटो ने कुछ नहीं देना। यों फोटो के सामने हजार वार मत्था टेकते रहो।

सुनो उसे भँवर पद से पारा, राधास्वामी राधास्वामी।

मैंने तो सब कुछ आसान कर दिया। किसी भी गुरु के दरवाजे पर जाकर नाक रगड़ने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें गुरु बता दिया। अगर यह चाहते हो कि तुम्हारा आवागमन न हो तो जब तक इन्सान को यह ज्ञान नहीं कि मन काल और माया का रूप है। जितना झगड़ा है तुम्हारे मन का है। इस मन को छोड़ो और उसके ऊपर जाओ वहाँ जाकर तुम्हें अपने रूप का अनुभव हो जायेगा और तुम इस संसार में काम करते हुये इस संसार के जाल में नहीं फँसोगे। जिसने मरना है वह मरेगा जिसने पैदा होना है वह पैदा

होगा । किस बात की चिन्ता । अपने कर्तव्य को पूरा करो मगर मोह में न आओ । जब तक ऐसा नहीं होगा कोई आदमी भी आवागमन से नहीं बच सकता । नहीं बच सकता, नहीं बच सकता ।

इस संसार में रहने के लिये वेद मार्ग है । शिव संकल्प अस्तु' कोई परिश्रम करने, कानों में उंगलियाँ डालने की आवश्यकता नहीं है । अपना ऐसा विचार करो जिससे कि तुम्हारा अपना, तुम्हारे परिवार देश और पड़ौसियों का कल्याण हो । इस विचार को पकाओ । जब तुम ऐसा विचार पकाओगे तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा । सदा आशावादी रहो ।

दातादयाल ने भी गुरु की बहुत महिमा गाई है । उसका कारण यह था कि वह आप भी गुरू बने हुए हो । इसलिए गुरु की अधिक महिमा गाई है । गुरु नाम ज्ञान, अनुभव और विवेक का है । क्योंकि जीव अल्प बुद्धि वाले होते हैं । जिस प्रकार छोटे बच्चे होते हैं उन्हें कुछ नहीं आता । जहाँ कोई दुख हुआ माँ की गोद में आये वह मार देती है । इस ढंग से अगर किसी गुरु ने चेलों के साथ व्यवहार किया है तो वे धन्य हैं । अगर इस ढंग से उसने नहीं किया और सम्पत्ति और डेरे बनाने के लिए किया तो वह पापी और दोषी है ।

सतलोक में तीन की गति प्रगटी, निरखी वहाँ सतगुरु की भृकुटी ।
सतगुरु मेरे हो गये रखवारा, राधास्वामी राधास्वामी ।।

कौन सत्गुरु रखवारा हो गया ? महाऋषि जी रखवारे हो गये या कोई और गुरू रखबारा हो गया । वह जो ज्ञान तुमने गुरू से प्राप्त किया है कि संसार में तुमने कैसे रहना है और कैसे पार जाना है वह ज्ञान तुम्हारी रखवारी करेगा न कि कोई भी गुरू । मैं तुम लोगों को बिल्कुल सच्ची बात बताता हूं ।

सबसे पहली बात जो मैं संसार को बताना चाहता हूं वह यह है कि संतान को सन्तान के विचार से पैदा करो । किसी परिवार नियोजन की आवश्यकता नहीं है । मगर हम कामी हैं । स्त्री हो तो पुरुष हो तो, काम के विषय में फँसे हुये हैं । मेरा भाव यह है कि न धोबी के घर के हैं न आद

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

के हैं ।

लख अलख की शोभा बहु न्यारी, गम अगम की महिमा थी प्यारी ।
ऊँचे चढ़ हो गया भव पारा, राधास्वामी राधास्वामी ॥

भव जीवन के होने को कहते हैं । जो हमारा जीवन हस्ती है, जीवन हस्ती है, जीवन और हस्ती के बोधमान हैं, उनको छोड़ जाना ही भवपारा है या इनकी ओर ध्यान न देना ही भवपारा है और मेरी समझ में कोई भवपारा नहीं आया । मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । (रिसर्च) कभी समाप्त नहीं होती । जहाँ [illegible] होती है वह अपनी ही रिसर्च है । अगर तुम किसी दूसरी चीज की [illegible] करो तो कभी समाप्त नहीं होगी । अपनी रिसर्च करो समाप्त हो जायेगी ।

गुरु नाम की धुनि पहिचान लिया, प्रकाश [illegible] रूप को जान लिया ।
मिल गया काल से छुटकारा, राधास्वामी राधास्वामी ॥
राधास्वामी राधास्वामी मैं गाता हूं ।
मैं तरा साथ सबको तारा, राधास्वामी राधास्वामी ॥

मैं इस काम से खुशी नहीं हूं । जीव बात को तो समझते नहीं बिना कारण (व्यर्थ) तंग करते हैं ।

राधास्वामी नाम क्या है ?

पिण्ड अण्ड ब्रह्मण्ड से पारा, वह है देश हमारा ॥

पिण्ड शरीर, अण्ड मन और ब्रह्मण्ड इनसे परे । मैं नहीं निकल सकता था । मैं बगदाद में इस मन से ऊपर भी अभ्यास करता था और नीचे भी अभ्यास करता था । मगर अब मैं मन के चक्करों को छोड़ जाता हूँ । नीचे अभ्यास की कोई आयश्यकता नहीं । मगर हाँ ! अगर संसार चाहते हो और तुम्हें संसार की आवश्यकता है तो तुम्हारे लिये पाँच नाम हैं । पाँच नाम की रट जवानी नहीं बल्कि पहले सहस-दल-कमल में ठहरो । संसार की उन्नति प्राप्त करो । फिर त्रिकुटी में अनुभव और ज्ञान प्राप्त करो । सुन्न में मस्ती लो । जहाँ तक मन का सम्बन्ध है ये दर्जे प्राप्त करना आवश्यक हैं । मैं ब्रह्मण्ड से परे तो जा ही नहीं सकता था । वहाँ मुझे आप लोगों ने पहुँचाया ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अब सीधा ही प्रकाश और शब्द को पकड़ता हूं। हम सब एक चेतन के बुलबुले हैं। उसकी हिलोर से पैदा हुए हैं और इसी में रहते हैं जैसे –

जल बिच मीन प्यासी, मोहे सुन सुन आवे हाँसी।

लोग कहते हैं मालिक हम में रहता है। अब मैं कहता हूँ कि हम मालिक में रहते हैं जैसे मछली पानी में रहती है।

नोट :

यह मेरे जीवन का अनुभव है। कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा है यही अन्त है। सारी आयु इन वाणियों और अभ्यास के जाल में फँसा। मुझे तो सन्त मत के सच्चा होने का इस एक विचार से विश्वास आया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। ये सब धर्म अपने मन के विचार हैं और जो मन से निकलता है। उस तरीके का नाम राधास्वामी जोग है अर्थात सुरत से शब्द को सुनना।　　　सबको राधास्वामी !

गजल

जहाँ आँख खोली वहाँ तुझको पाया।
कहीं जोत था तो कहीं था तू छाया॥
कमल है कमल का बना रूप तुझ से।
हुआ मक्खी और वास तू लेने आया॥
पवन हैं आकाश आग मिट्टी है पानी।
तू सब कुछ है और सबमें रहता है छाया।
कहीं होके परकट दिया सबको दर्शन॥
कहीं छिप गया छिप के छिपी को छिपाया।
छिपा आग के रूप चकमक में बैठा।
हरी मेंहदी में लाली का रंग लाया।
जिधर देखता हूँ तुझे देखता हूँ।
मेरी दृष्टी में आए तू ब्रह्म माया॥
दया सत्गुरु की मुझ पर हुई अब।
परम सन्त अवतार धर के चिताया॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

यज्ञ क्या है

याद नहीं कब और किस समय कई देहाती ब्राह्मण मुझसे मिलने आये, अक्सर सवाल करने वाले ब्राह्मण ही होते हैं। मैं उनका दर्शन कर अति प्रसन्न हो जाता हूँ। इनके प्रश्न करने से मुझे सोच विचार का अवसर हाथ आता है और नये नये विचार मिल जाते हैं। मैं समझता हूं कि मैं इनके सवालों का जवाब देता हूं, परन्तु वास्तव में [illegible] वह ही मुझे कुछ न कुछ ध्यान दिला जाते हैं। मैंने अब आदर के साथ उनको आसन दिया वह बैठ गये और पूछने लगे, महाराज यज्ञ का क्या मत-लब है ? कृपया हमें समझा दीजिये।

मैंने कहा, 'यज्ञ कहते हैं केवल पूजने को और पूजा का सर्वश्रेष्ठ साधन दान है। यदि यज्ञ की व्याख्या दान देना की जाय तो कोई आश्चर्य नहीं।"

पंडित—यज्ञ में अग्नि की आहुति दी जाती है, क्या आप अग्नि को आहुति का देना यज्ञ कहेंगे ?

मैं—अग्नि और कोई चीज नहीं है। हमारे अन्तर में जो वस्तु गर्मी के रूप में जीवन की चिनगारी बनी हुई आग को बढ़ाना चाहती है उसका नाम अग्नि है। यह शब्द धातु (अग्नि) से निकला है जिसका अर्थ 'चलना' है और इसी अग या अग्नि से हिन्दी शब्द (आगे) निकला है। आग अगुआ हैं। हर प्राणी आग की ओर बढ़ना चाहता है, इसलिए अग्नि होत्र या अग्नि यज्ञ पूजा की वह परिपाटी है जो जीवन को आगे की ओर बढाये ले जाती है और इसका मुख्य साधन दान देना है। अग्नि होत्र वास्तव में आचार विचार के साथ अपने शरीर को ऐसा सात्वकी खाद्य पदार्थ देता है जो उसे जीवन-पर्यन्त (लली) काम का बनाये रक्खे।

नियम पूर्वक रुचि के साथ खाओ, पीयो, वास्तव में यही असली अग्नि होत्र है, शेष सब दिखाना है। 'होना' 'होम' इत्यादि पक्के खाद्य पदार्थों का नाम है। असल में असली यज्ञ यही है जो अपनी उन्नति की दृष्टि से और

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जीवन के आगे बढ़ाने के अभिप्राय से किया जाता।

ग्रास ग्रास घूँट घूँट के साथ साथ ईश्वर का नाम ले ले कर खाना पीना ही ब्रह्म यज्ञ अथवा आहुति देना है।

दूसरा प्रश्न 'आप शब्दों के अच्छे अर्थ लगाते हैं' 'होम' और 'होत्र' का अर्थ तो यही है, परन्तु 'अपने आपको दान देना' यह कभी सुना नहीं गया। साधारण रीति में यज्ञ की प्रथा आग मे घी हलुआ, खीर या अन्य प्रकार की सामग्री आहुति देने [illegible]

उत्तर—'शब्द म[illegible] है। उनकी जड़ में जाओ, पता लग जायगा। यज्ञ का असली अर्थ तो यही है जो मैं तुमको बताता हूं 'घर में दिया जला कर मन्दिर में फिर जलाना' परन्तु बाद को दूसरों के दान देने का ध्यान आया और व्यवहार में यज्ञ और हवन के साथ साथ दान दक्षिणा की परिपाटी चल पड़ी लेकिन दान की सीमा केवल अपने आप ही तक न रह जाय और उसका भाग दूसरों को भी मिले। औरों को दान देना भी अपने ही को दान देना है। उसमें अपने पराये का भाव दृष्टि में रखना उचित नहीं। तुम खाते पीते हो, उदर पालन करते हो, तुम्हे आनन्द मिलता है और दूसरों को खिला पिला कर प्रसन्न करते हो, वह आनन्द उलट कर कई गुना तुम्हारे चित्त को प्रसन्न करता है। इस प्रकार तुम स्वयं अपने अपने आप हो और अन्य भी तुम्हारे अपने हैं। यह यज्ञ का भावार्थ है। जो वस्तु भी किसी को दो, प्रेम भाव, सन्मान और नम्रता के साथ देने ही का महत्व है और इसका फल भी बड़ा है। अपने खाने की अपेक्षा औरों को खिलाते में जो स्वाद मिलता है वह स्वयं करके देखने ही से भले प्रकार समझ में आ सकता है।

प्रश्न–'तो आपकी दृष्टि में जो यज्ञ घरों में किये जाते हैं उनको बिल्कुल ही बन्द कर देना चाहिये ?'

उत्तर–'नहीं ! यह मेरा मतलब कदापि नहीं, किन्तु जो मनुष्य आग में अच्छी अच्छी महकदार सामग्री देता है वह अपने अड़ोस पड़ोस वालों को खुशी देता है। स्वयं वह आप प्रसन्न होता है वायु, आकाश की शुद्धि होती

है और इसका परिणाम स्वास्थ्यरक्षा का हेतु और उसका साधन है। यह एक प्रकार का ऋण भी है जिसका, हर व्यक्ति को चुकाना धर्म है। इस दृष्टि से इसकी मनाई नहीं की जाती। हा! क्योंकि मेरी दृष्टि वास्तविक दशा पर रहती है, इस कारण मैं तुमको बाल को खाल निकाल कर दिखाने का परिश्रम करता हूँ। इसके अतिरिक्त मेरा और कोई अभिप्राय नहीं। न किसी का खण्डन, न किसी का मण्डन, घरों की सफाई, आस पास के दृश्यों को शोभायमान बनाना, सामाजिक व्यवहार अथवा धर्म की परिपाटी को नियमानुसार चलना और हर प्रकार के पुण्य दान देना यह सब यज्ञ के ही रूप हैं।

पण्डित प्रसन्न हुए! 'खूब! आपकी युक्ति ठीक है परन्तु 'अजा' कहते हैं बकरी को, गो' कहते हैं गाय को, 'अश्व कहते हैं घोड़े को 'नर' कहते हैं मनुष्य को 'महेश' कहते हैं भैंसा को, क्या आप मानते हैं कि यज्ञ में इन जीवों या पशुओं की आहुति नहीं दी जाती थी और लोग इन्हें नहीं खाया करते थे? यदि यज्ञ में इनकी बलि देकर खाने को रीति नहीं थी तो यह शब्द क्यों गढ़े गये?'

उत्तर– संसार में माँसाहारी माँस खाते हैं और खाते रहेंगे। आदि के नर पशुओं में यह रीति बहुत होती है, वह माँसाहारी थे। अब भी संसार में बहुतायत के साथ इसका रिवाज है और आगे भी ऐसा ही रहेगा। मांस खाने की परिपाटी केवल अज्ञान की दशा ही में रहती हैं। जब सभ्यता आजाती है तो जीव रक्षा धर्म हो जाता है 'अहिंसा परमो धर्म' और वह जीवन दान देने लगता है, किसी की जान नहीं लेता। कहावत है 'काया राखे धर्म है, काया जारे पाप' अथवा शारीरिक उन्नति पुण्य है और शारीरिक निर्बलता पाप है। शारीरिक रक्षा हेतु स्वार्थी भूखा मनुष्य जो न कर डाले वह थोड़ा है और फिर यह प्रथा तो संसार में सदैव से रही है और रहेगी। यह बात अवश्य है कि जब सभ्यता का विकास होने लगता है तब ही मनुष्य अहिंसा ब्रत, चाहे वह आदमी की हो या [illegible]

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सुधार के नियम की घोषणा करने लग जाता है। यदि तुम इसकी जाँच करो तो अब भी संसार में ऐसे मनुष्य मिलेंगे जो आदमी का माँस खाते हैं। इसमें अब कमी तो अवश्य हो चली है क्योंकि अब सभ्यता संसार में अधिक जाग्रत होगई है परन्तु यह परिपाटी बिल्कुल ही नहीं मिटी और यदि आगे मिटे भी नहीं तो कोई आश्चर्य नहीं। वैसे तो बकरी, गाय, घोड़ा इत्यादि के खाने वाले, मुकाबिले अहिंसक सभ्य मनुष्यों की तादाद के अधिकता के साथ हैं और ऐसे ही रहेंगे भी। जो बात मैं कह रहा हूं इसका आशय केवल सभ्य मनुष्य समाज से है, जो जैसा है वैसा करेगा। सिंह, भेड़िये, कुत्ते, चीते इत्यादि स्वाभाविक ही माँसाहारी होते हैं। इन्हें कौन रोक सकता है ? वह भी तो आखिर मनुष्य ही की डराबनी वृत्तियों के रूप हैं। यह मनुष्य के स्वाभाविक गुणों के जीते जागते दृश्य हैं जो मनुष्य ही से उत्पन्न हुए और उसके चारों ओर फैले हुए हैं। मनुष्य संसार में सर्वश्रेष्ठ है। जब इसका ध्यान अपने रूप के जानने की ओर जाता है वह दिन सभ्य होता हुआ अग्नि होत्र करने लग जाता है, जो जीवन को आगे की ओर ढकेल ढकेल कर ले जाता है। मैंने अग्नि शब्द की व्याख्या करदी जिससे 'आगे' का शब्द निकला है। अग्नि आगे चलने अथवा उन्नति करने का नाम है और जठराग्नि में इसकी जड़ है यदि तुम वास्तविक अवस्था का ज्ञान चाहते हो तो निर्पक्षता की ओर दृष्टि रहे और जो नकल पसन्द अथवा पक्षपाती हो तो नकली पूजा पाठ के साधनों में फँसे हुए पशुओं का बलिदान देते रहो। कौन रोकता है ? माँस खाओ, खून पियो, चर्बी हज़म करो तुम्हें इख्तियार है। दुनिया तो दुनिया ही है, मेरा केवल उन्नति की ही ओर ध्यान बढ़ाने का परिश्रम है। किसी से लड़ना, झगड़ना, खण्डन-मण्डन और शास्त्रार्थ करना मेरा स्वभाव नहीं, आगे किसी को इख्तियार है।

प्रश्न—स्वामीजी बुरा मानने की बात नहीं है। हम तो जिज्ञासु

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बन कर आप के पास आये हैं, तर्क कुतर्क के कारण नहीं।'

उत्तर 'मै तुम्हारे इस जिज्ञासा भाव का आदर सम्मान करता हूँ। यही मेरी यज्ञ और पूजा है। तुम खोज में लगे हुए मुझसे ज्ञान का दान लेने आये हो और मैं सप्रेम नम्रता पूर्वक तुमको ज्ञान का दान देता हूं। मेरा यज्ञ तो यह है, अब रह गया कि पंडित लोग काशी इत्यादि तीर्थों में बकरा, भैंसों का बलिदान करते हैं। मनुष्य के मांस को यज्ञ की वेदी में भून कर खाते हैं। इन लोगों से उलझना मेरा काम नहीं, जो जैसा होग वैसा ही तो काम करेगा।

प्रश्न–'तो आप गो मेध, अश्वमेध, अजामेध, महेशामेध, नरमेध इत्यादि यज्ञों के विरुद्ध हैं ?'

उत्तर– नहीं ! न मैं किसी के खिलाफ न किसी को मुआफिक। मेरा अग्निहोत्र तो यह है कि मैं ज्ञान की आहुति देता हुआ जीवन की अग्नि को बढ़ा-बढ़ा कर आगे की ओर ले जाने का साधन करता रहता हूं। यदि तुम्हें अच्छा लगे तो तुम भी करने लग जाओ यदि रुचि न हो तो तुम जाना तुम्हारा काम जाने, जाओ औरों की तरह तुम भी खून खराबी अथवा हिंसा मार्ग के अनुयाई बनो, तुम्हें अधिकार है।'

प्रश्न– आप इन शब्दों की व्याख्या कर देते तो बड़ी कृपा होती।'

उत्तर–'अजा' कहते हैं बकरी को। संस्कृत धातु 'अज' आगे बढ़ना से निकला है। असभ्य पुरुषों के कोष में अजामेध का अर्थ बकरी का बलिदान करके खाना है। मेरे मानुषी कोष में इसका अर्थ जीवन की उन्नति करते हुए विवेक विचार के साथ आगे बढ़ना है। उन्नति का ध्यान मन में रहे। जो पग पड़े आगे ही बढ़ता चले जीवन के निचले हिस्से में न रहने पाये यही अजामेध यज्ञ है।'

'गो' कहते हैं इन्द्रियों को इन इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करो। स्थिर करो यह वहर मुखी न होने पायें। यह मेरे मानुषी कोष में

'गोमेध यज्ञ है'

'अश्व' संस्कृत में घोड़े को कहते हैं। मनुष्य को मन से घोड़े की उपेक्षता है वह चंचल है, चपल है, अहंकारी है। इसको लगाम लगाओ। इस पर सवारी करो और फिर इसके सहारे बाहर मुखी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करके आगे बढ़ते चलो, यह मेरे मानुषी कोष में 'अश्वमेध यज्ञ' का अर्थ है और यदि कोई घोड़े के मारने से ही प्रसन्न हैं तो उन्हें इख्तियार !

'महेशा' संस्कृत में 'भैंसे' को कहते हैं। यह 'महत' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'बड़ाई' अपने बड़प्पन अथवा उसके भाव को गुप्त रक्खो जिस से तुम में अहंकार अथवा घमंड की सम्भावना न रहे किंतु इसी अहंकार अथवा बड़प्पन के भाव को यदि बढ़ा कर मनुष्य मात्र के उपकार में लगादो यही मेरी मानुषी कोष में 'महेशा-मेध यज्ञ की व्याख्या है'।

'नर, कहते हैं मनुष्य को यह संस्कृत धातु 'नरी' से निकला है।

'नर, कहते हैं मनुष्य को यह संस्कृत धातु 'नरी' से निकला है।

नरी का अर्थ शिक्षा देना है, यदि तुम मनुष्य हो तो मनुष्य के आदर्श बनो। अन्य पुरुषों को धर्म का रास्ता बताओ, आप सुधरो औरों को सुधारो, तुम्हारी मनुष्यता की आहुति समस्त प्राणी मात्र के अर्पण होजाय, मेरी सभ्यता के कोष में 'नरमेध' का केवल इतना ही अर्थ है। यदि कोई पशुओं के समान मनुष्य को भून कर खाना चाहे जैसा कि अघोरी लोग बहुधा करते रहते हैं अथवा अफरीका के बनमानुषों का चलन है तो उनकी ओर मेरी दृष्टि नहीं है। अभी तक वह मनुष्य नहीं बने जब बनजायेंगे स्वयं आप सँभल जायंगे। इस कारण वास्तविक में मनुष्य का काम सिर्फ प्रेम करना है और बस ! मेरे खास सामाजिक धर्म में 'नर मेध' का यही भाव है। संस्कृत के कोष मौजूद हैं, आप पढ़े लिखे हो। इन्हें देखो असलियत को समझो और मनुष्य बनो।

पंडित जी मेरी बातों से प्रसन्न हुए और अपने घर को चले गये।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गरुड़जी और शिवजी का सम्वाद

(गुरू और सत्संग महिमा)

गरुड़जी निराश होकर चल दिये। उदास थे, जब मनुष्य का काम नहीं बनता उसका कार्य सिद्ध नहीं होता, तब उसे दुख दबोच लेता है, चिंता घेर लेती है, अशाँत हो जाता है। ईश्वर न करे कोई भ्राँति में पड़े। भ्रम का भूत जब किसी के सिर, अन्तःकरण और शरीर में प्रवेश करता है तो फिर उसे कहीं भी चैन नहीं लेने देता। वह भ्रमता, भटकता फिरता रहता है। इस रोग की औषधि कठिन होती है। पढ़े-लिखे मनुष्य जिनका जीवन बनावटी होता है, कही-सुनी बातों में आकर बहुधा भ्रम के वशीभूत हो जाते हैं और बहुत बुरे प्रकार से मारे जाते हैं। इनकी विद्या, अविद्या बन जाती है। अन्धों के समान ठटोल टटोल कर चलते हैं। युक्ति पर युक्ति लड़ाते हैं। ग्रन्थ इनके लिए ग्रंथि बन जाते हैं और इन्हें जीते जी इस आपत्ति से छुटकारा पाने का अवसर हाथ नहीं आता। इनसे तो मूढ़ प्राणी अच्छे होते हैं, जिनको जगत की गति नहीं व्यापती।

रास्ते में जारहे थे। कैलास पर्वत की तरफ दृष्टि थी। जो शिव भगवान का निवास-स्थान था। इधर तो ये उधर जारहे थे, उधर से शिव भगवान पार्वती के साथ नन्दी बैल पर चढ़े हुए कुबेर नामक देवता के घर को जारहे थे। गरुड़ ने देखा, पहचान लिया, शिव का रूप अद्भुत है। दिगम्बर नंगे-धड़ंगे हाथ में डमरू त्रिशूल धारण किये हुए, ललाट पर अर्द्ध-चन्द्र चमकता हुआ, सारे शरीर पर भस्म मला हुआ, बरगद की जड़ों के समान जटा जूट बँधी हुई, बैल पर मृग-चर्म का आसन बिछा हुआ त्याग-वैराग की मूर्ति! आँखें लाल लाल अंगारा बरसाने वाली! तेजस्वी तेजवान!

गरुड़ ने साष्टांग दण्ड प्रणाम किया। शिवजी ने इन्हें देख कर करुणा-

रस में सनी हुई वाणी से इनका सत्कार किया। गरुड़! तुम मेरी खोज में चले हो। मैं जानता हूं तुम किस आशय को लेकर विष्णुलोक से निकले हो। रास्ते में मिले मैं तुमको कैसे कोई बात समझा बुझा सकता हूं। ज्ञान ऐसा विषय नहीं है कि जो राह चलन्तु पथिक को साधारण प्रश्नोत्तर में बताया जासके।

मिले गरुड़ मार्ग में मोही।
का विधि मैं समझाऊँ तोही।

इसके लिए स्थान, [illegible] और लीला चरित्र की आवश्यकता है। दर्शन ज्ञान और चरित्र तीनो साथ-साथ चलते हैं और निज स्थान ही पर यह लाभ-दायक होते हैं। देखना, सुनना, और चरित्र का गढ़ना स्थान के आधीन हैं। स्थान ही में साधना की जाती है। स्थान में अनुभव की प्राप्ति सम्भव है। साधन सम्पन्नता आप अनुभव सम्पन्न प्रदान करती है। बिना साधन के अनुभव नहीं होता, और यह दोनों स्थान ही पर हो सकते हैं। मैं इस समय कुबेर जी से मिलने जारहा हूँ। रास्ते में वार्त्तालाप नहीं कर सकता।' गरुड़ जी ने कहा—नाथ! क्या आप भी मुझे निराश करेंगे?'

शिवजी ने उत्तर दिया, 'मैं किसी को भी निराश न करता हूं। मेरे यहां आकर कोई निराश नहीं जाता। लेकिन समय और है। तुम अधिकारी हो। तुम्हारे हृदय में विकट संशय उत्पन्न हुआ है। उसके निवारण करने के लिए समय चाहिये। तुम जिज्ञासु के रूप में आये हो। जिज्ञासु आर्त्त होता है। आर्त्त को जो बचन कहा जाता है, वह उसकी गाँठ बाँध लेता है। तुम मेरा कहना मान जाओ। अपने मार्ग को खंडित न करो। इसीं पथ से सुमेरु पर्वत पर चले जाओ। वह तुम्हारी नाक की सीध में है। यहाँ उस पहाड़ की चोटी पर कल्पवृक्ष है। उसकी छाया में अनेक प्रकार के चहचहा लगाने वाले हंस पक्षी बसते हैं। इनके मध्य में एक परमहंस बैठ कर अपना शब्द नाद सुनाता रहता है। जो राम नाम का कीर्तन या राम का कथा कीर्तन है, वहां रात दिन यही चर्चा होता रहता है। इसके अतिरिक्त वह और कोई काम नहीं करते। इस परमहंस का नाम कागभुशण्डी है। उससे जाकर

मिलो । उसका सतसंग करो । उसका वचन सुनो । वहां जाने से तुम्हारे का नाश आप ही आप हो जायेगा । यह सुगम, सरल और साधारण उपाय है ।

नित नियम जिसका, कथा और कीर्तन ।
शान्त और निरभ्रांत जानो उसका मन ॥
जो कथा और कीर्तन नित करता है ।
चैन सुख आनन्द, मन में भरता है ॥
जिसका उद्यम हो, कथा और कीर्तन ।
उसके वचनों का करो, श्रवण मनन ॥

गरुड़ ने फिर विशेष बात चीत नहीं की । शीश झुकाकर कैलाशपति और पारवती को नमस्कार किया और उनकी आज्ञा लेकर सुमेरू पर्वत की ओर अपना पग बढ़ाया । जब वह दृष्टि से ओझल हुआ, पारवती ने शिव से पूछा, ? 'प्रभो ! आप जगत गुरु और परमेश्वर हैं । गरुड़ आपके पास शिक्षा और दीक्षा लेने के लिये आये थे । आपने उनको टाल बताई, कागभुशंडी के पास जाने की सम्मति दी. इसमें क्या रहस्य है ?'

शिवजी ने उत्तर दिया, 'प्रिया ! 'मैं योगी, त्यागी और भूत, वेताल, आदि का तो गुरु हो सकता हूं और उनको शिक्षा दे सकता हूँ. क्योंकि मैं योग त्याग, वैराग का इष्ट हूँ, लेकिन मनुष्य, पक्षी और जीव जन्तु का गुरु नहीं हो सकता । गुरु तो वही होता है और हो सकता है जो उसकी जाति का हो । मनुष्य का गुरु जब होगा । मनुष्य ही होगा ईश्वर और परमेश्वर उसका गुरु न कभी हुआ । और न होगा । यह सृष्टि नियम के प्रतिकूल है । प्रेम और प्रीति परस्पर व्यवहार है । भक्ति और ज्ञान का दान जब मिलेगा सजातीय गुरु ही से मिलेगा । सूक्ष्म प्राणी का गुरु सूक्ष्म प्राणी होता है, स्थूल शरीर धारी का गुरु स्थूल शरीर धारी ! मनुष्य जब तक जीता है, स्त्री उसका प्रेम करती है । वह मर जाये और सूक्ष्म शरीर में आकर उससे मिलना चाहे तो वह डर कर दूर भाग जायेगी । क्योंकि अब वह उसकी जाति का न रहा यह नियम है और नियम भी प्रकृति और सृष्टि का है । केवल सच्चे अधिकारी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

को उसकी समझ बूझ रहती है। जो लोग इस नियम को नहीं समझते, उनकी भक्ति अनाप शनाप और बेतुकी होती है।

पार्वती—क्या गरुड़ को इस रहस्य की समझ थी ?

शिवजी - वह अधिकारी जिज्ञासू थे। उनको रहस्य की स्वाभाविक समझ थी।

खग समझे खग ही की भाषा।
ताते [illegible]ा गुप्त सत राखा॥

ज्ञान तो संसार में परिपूर्ण है। सूरज, चाँद, वायु, जल, पृथ्वी सब में ज्ञान है। इनसे मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है, वह अधूरे का अधूरा रहता है। उसके ज्ञान की पूर्ति जब होगी मनुष्य गुरू ही से होगी।

बन्दौं गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज, जासु वचन रवि कर निकर॥

पार्वती चुप हो रहीं। और शिव और गरुड़ के सम्बाद के पश्चात कुवेर जी के स्थान का रास्ता लिया।

—०—

ग़ज़ल

फिदा जो मुझ पै हैं, उन पर निसार होता हूँ।
कदम को चूमता हूँ, खाक सार होता हूं॥
अगर है कोई, मुहब्बत का, मेरे दम भरता।
फिदा मैं उसके लिये, बार बार होता हूँ॥
तरीके इश्क में, इज्जत की है हविस नाहक।
जलील होता हूँ खुद, और ख्वार होता हूं॥
गदा जो हैं, मेरे दर के, वह दिल से प्यारे हैं।
इन्हीं गदाओं का, शहरे यार होता हूं॥
न छेड़ो भूल के, मेरे दीवानों को हरगिज।
हूं एक, उनके लिए, मैं हजार होता हूं॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार अपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता		शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री [redacted] स्वास्थ्य व [redacted]ज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

श्री

सम्पादक — श्रीमती सुधा मीतल

प्रबन्धक व प्रकाशक—
श्रीमती सुधा मीतल
शिव भवन, लेखराज नगर
अलीगढ़